REVIEW OF RESEARCH

चमोली जनपद में अनुसूचित जाति का आर्थिक रूप से पिछडने के कारणः एक भौगोलिक अध्ययन

[1]जयचन्द्र कुमार गौतम, [2]गणेश सिंह,[3]डॉ. इन्द्र सिंह कोहली

[1]अस्सिटेंट प्रोफेसर, रा. स्ना.महा. हल्दूचौड, नैनीताल।
[2]लेक्चर, रा. इ. कालेज गौणा, चमोली।
[3]अस्सिटेंट प्रोफेसर (गैस्ट फैकल्टी), रा.स्ना.महा. नागनाथ पोखरी, चमोली।

ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514
VOLUME - 8 | ISSUE - 8 | MAY - 2019

सारांश
अनुसूचित जाति का वास्तविक स्वरूप जानने के लिए भारत की प्राचीन जाति व्यवस्था के इतिहास पर दृष्टिपात करना आवश्यक है। आर्य आगमन के पश्चात् अस्पृश्य और दलित जातियॉ इतिहास के हर दौर में सामाजिक विषमताओं, सास्कृतिक–सामाजिक बहिष्कार, घोर अस्पृश्यता, जाति भेद और दासता का शिकार रही है। लेकिन देश की एकता, संस्कृति, कला और आर्थिक समृद्धि में उनके बहुआयामी योगदान की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। उनके उदय और विकास अद्यपतन और जीवन संघर्ष के विषय में धर्म शास्त्रों के अतिरिक्त इतिहास में अपूर्ण अथवा अरिंजित जानकारी मिलती है। प्राचीन भारतीय ग्रन्थ ऋगवेद के अनुसार भारतीय समाज में चार वर्ण स्थापित थे, जो कि ब्राहमण, क्षत्रीय, वैश्य एवं शूद्र है। शूद्र जिन्हें कि समाज में सबसे निचला स्तर प्रदान था उन्हें ''सभी के सेवक'' नाम से भी सम्बोधित किया जाता था। ऋगवैदिक काल से पूर्व समाज का विभाजन मुख्य रूप से व्यवसाय के आधार पर था किन्तु समय परिवर्तन के साथ यह जाति के आधार पर हो गया। प्रस्तुत अध्ययन के लिए उत्तराखण्ड राज्य के सीमान्त क्षेत्र के जनपद चमोली जनपद का चयन किया गया है यह जनपद अनुसूचित जाति के आर्थिक सामाजिक एवं राजनैतिक विकास के परिपेक्ष्य में राज्य के अन्य जनपदों से पिछडा हुआ है जिस कारण अध्ययन के लिए चमोली जनपद का चयन किया गया है। चमोली जनपद उत्तराखण्ड के तीन सीमान्त जनपदों (उत्तकाशी, पिथौरागढ, चमोली) में से एक है। प्रस्तुत शोध पत्र में चमोली जनपद में अनुसचित जाति की जनसंख्या का आर्थिक रूप से पिछडने के कारणों पर एक किया गया है।

कुंजी शब्द– चमोली, अनुसूचित जाति, आर्थिकी,

अध्ययन क्षेत्रः–
उत्तराखण्ड राज्य के गढवाल मंडल में स्थित जनपद चमोली $29^0\ 55'\ 00''$ उत्तरी अक्षांश से $31^0\ 03'\ 45''$ उत्तरी अक्षांश तक एवं $79^0\ 02'\ 39''$ पूर्वी देशान्तर से $80^0\ 55'\ 29''$ पूर्वी देशान्तर के मध्य 8030 वर्ग किमी क्षेत्र में फैला है। चमोली जनपद प्रशासनिक दृष्टि से गढवाल मण्डल के अन्तर्गत आता है। प्रशासनिक इकाइयों के आधार पर जनपद में कुल 6 तहसीलें, 1 उप तहसील, 9 ब्लॉक, 601 ग्रॉम सभा तथा कुल 1244 ग्राम है जिसमें से 1154 आबाद ग्राम, 78 गैर आबाद ग्रॉम, 12 वनारक्षित ग्राम है। तथा 2 नगर पालिका एवं 4 नगर पंचायत है। जनपद की उत्तरी सीमा चीन अधिकृत तिब्बत से मिलती है।

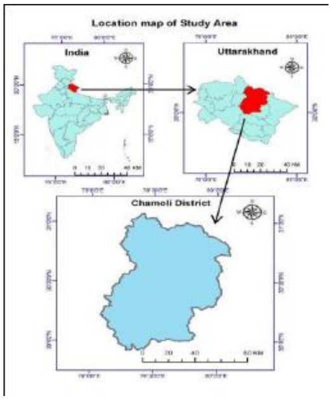

Source: SOI shapefile

LBP PUBLICATION

अध्ययन के उद्देश्यः— प्रस्तुत अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य उत्तराखण्ड राज्य के सीमान्त जनपद चमोली में अनुसूचित जाति की जनसंख्या का आर्थिक रूप से पिछडने के कारकों का अध्ययन करना है।

शोध विधि तन्त्र :— प्रस्तुत अध्ययन पूर्णतः प्राथमिक समकों के संकलन पर आधारित है। चमोली जनपद मे वर्तमान समय में 9 विकासखण्ड है एवं अध्ययन के लिए प्रश्नावाली का निर्माण किया गया एवं प्रत्येक विकासखण्ड से अनुसूचित जाति की बहुलता वाले चार—चार गॉवों का चयन किया गया है तथा प्रत्येक गॉव से 20—20 उत्तरदातो का चयन किया गया है। इस प्रकार प्रस्तुत अध्ययन के कुल 720 उत्तरादाताओं पर आधारित है।

जनपद चमोली में अध्ययन के लिए न्याय प्रतिदर्श विधि द्वारा चयनित ग्रामों की सूची

विकासखण्ड	ग्रामों के नाम	विकासखण्ड	ग्रामों के नाम
दशोली	गौणा	कर्णप्रयाग	घडियाल
	ईराणी		बैनोली
	डुर्मी		नाकोट
	बौला		नौटी
देवाल	स्वाड	नारायणबगड	मोली लागा
	लेसरी		असेड
	तालौर		घडियारडुग्री
	पलवाडा		डुग्री
गैरसैण	मलाई	पोखरी	सॉकरी
	लगंटाई		देवर वल्ला
	खेती		जौरासी
	गिरतोली		सिमखोली
घाट	मथकोट	थराली	जेला
	कुमजुग		चिडिगास्टेट
	जाखनी		लोल्टी
	मोखमल्ला		रतगॉव
जोशीमठ	हेलग	पल्ला	
	सलूडडुग्रा	टगणीमल्ली	

चमोली जनपद में अनुसूचित जाति का आर्थिक रूप से पिछडने के कारण

चमोली जनपद में अनुसूचित जाति अन्य जातियों व समाज की अपेक्षा आर्थिक रूप से पिछडी हुई है। जनपद में अनुसूचित जाति का आर्थिक रूप से पिछडने के कारणों को जानने के लिए सर्वेक्षित ग्रामों से निम्न आधार पर आकडें सकलित किये गये जिनमें से प्रमुख आधार शिक्षा की कमी, पारिवारिक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, विकास की सोच का अभाव, स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याऍ, अन्य कारण एवं उपरोक्त सभी कारण थे। जनपद में अनुसूचित जाति का आर्थिक रूप से पिछडने के कारणों में प्रतिशत के आधार पर सर्वाधिक उपरोक्त सभी कारण है जो कि जनपद में 41.69% है। जनपद के विकासखण्डों में कर्णप्रयाग में 64.48%, पोखरी में 61.53%, दशोली में 56.73%, गैरसैण में 52.5% जनसंख्या मानती है कि उपरोक्त सभी कारण अनुसूचित जाति के आर्थिक रूप से पिछडने के कारण है जो कि जनपद के औसत प्रतिशत से अधिक है वही दूसरी और घाट में 41.25%, नारायणबगड में 28.75%, थराली में 36.37%, देवाल में 30% एवं जोशीमठ में 7.5% है जो कि जनपद के औसत प्रतिशत 41.69% से कम है। चमोली जनपद में एक और अनुसूचित जाति के आर्थिक रूप से पिछडने के कारणों में विकासखण्डों में कर्णप्रयाग में उपरोक्त सभी प्रकार की समस्याओं का प्रतिशत 64.48% है वही दूसरी और जोशीमठ विकासखण्ड में यह मात्र 7.5% है।

चमोली जनपद में अनुसूचित जाति के आर्थिक रूप से पिछडने के विभिन्न कारणों में प्रतिशत के आधार पर द्वितीय क्रम में शिक्षा की कमी है जो कि जनपद के सभी कारणों में से 31.08% है। विकासखण्डों में यह जोशीमठ में 51.25%, नारायणबड में 42.5%, एवं देवाल में 43.75% है जो कि जनपद के औसत प्रतिशत 31.08% से अधिक है । जनपद में दूसरी और दशोली में 20.89%, पोखरी में 20.51%, घाट में 28.75%, कर्णप्रयाग में 25%, थराली में 22.08%, एवं गैरसैण में 22.5% है जो कि जनपद के औसत प्रतिशत 31.08% से कम है। जनपद में आर्थिक रूप से पिछडने के कारणों में प्रतिशत के आधार पर तृतीय क्रम में विकास की सोच का अभाव समस्या आती है जो कि जनपद में 15.61% है। जनपद के 9 विकासखण्डों में यह जोशीमठ में 38.75%, थराली में 16.89%, एवं देवाल में 18.75% है जो कि जनपद के औसत प्रतिशत 15.61% से अधिक है वही दूसरी और जनपद में दशोली में 10.44%, पोखरी में 11.55%, कर्णप्रयाग में 3.94%, नारायणबगड में 8.75%, एवं गैरसैण में 5% है जो कि जनपद के औसत प्रतिशत 15.61% से कम है।

जनपद में पारिवारिक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि की समस्या भी अनुसूचित जाति के आर्थिक रूप से पिछडने का एक मुख्य कारण है जनपद में 10.62% जनसंख्या इस कारण को मानती है। जनपद में विकासखण्डों के आधार पर यह प्रतिशत थराली में 23.37%, गैरसैण में 18.75%, नारायणबगड में 20% एवं दशोली में 11.94% है जो कि जनपदीय औसत प्रतिशत 10.62% से अधिक है। दूसरी और जनपद में जोशीमठ विकासखण्ड में 2.5%, घाट में 5:, कर्णप्रयाग में 6.58:, एवं देवाल में 7.5: है जो कि औसत से कम है। आर्थिक रूप से पिछडने के कारणों में अन्य कारणों का जनपद में 0.72% है जो कि पोखरी में एक मात्र विकासखण्ड में 6.41% है। जनपद में अन्त में स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याएँ भी एक समस्या है जिस कारण अनुसूचित जाति आर्थिक रूप से पिछडी हुई है इसका जनपद में मात्र 0.28% है जो कि थराली में 1.29% एवं गैरसैण में 1.25% है। उपरोक्त ऑकडों को तालिका. 1 एवं आरेख 1 एवं 2 के द्वारा प्रदर्शित किया गया है।

तालिकाः—1

जनपद चमोली में विकासखण्डवार अनुसूचित जाति के आर्थिक रूप से पिछडने के कारण (प्रतिशत में)

क्र.सं.	नाम	जोशीमठ	दशोली	पोखरी	घाट	कर्णप्रयाग	नारायणबगड	थराली	देवाल	गैरसैण	चमोली
1	शिक्षा की कमी	51.25	20.89	20.51	28.75	25	42.5	22.08	43.75	22.5	31.08
2	पारिवारिक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि	2.5	11.94	0	5	6.58	20	23.37	7.5	18.75	10.62
3	स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याएँ	0	0	0	0	0	0	1.29	0	1.25	0.28
4	विकास की सोच का अभाव	38.75	10.44	11.55	25	3.94	8.75	16.89	18.75	5	15.61
5	अन्य कारण	0	0	6.41	0	0	0	0	0	0	0.72
6	उपरोक्त सभी कारण	7.5	56.73	61.53	41.25	64.48	28.75	36.37	30	52.5	41.69
7	कुल योग	100	100	100	100	100	100	100	100	100	100

स्त्रोतः स्वयं संकलित,

LBP PUBLICATION

आरेखः 1
जनपद चमोली में अनुसूचित जाति के आर्थिक रूप से पिछड़ने के कारण (प्रतिशत में)

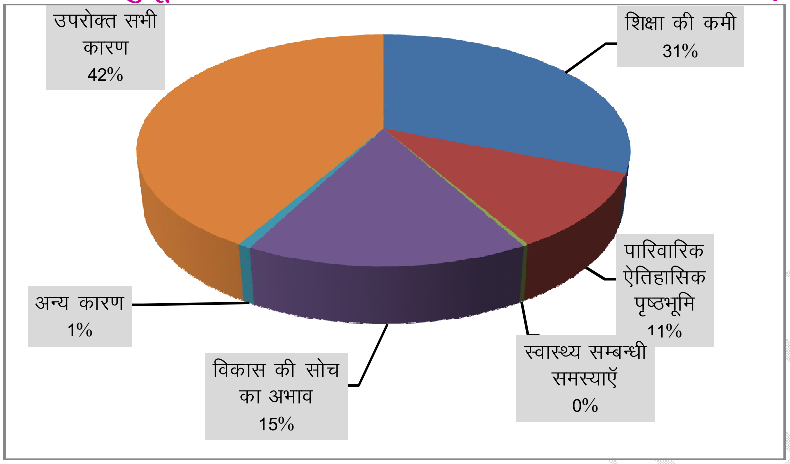

आरेखः 2
जनपद चमोली में विकासखण्डवार अनुसूचित जाति के आर्थिक रूप से पिछड़ने के कारण (प्रतिशत मे)

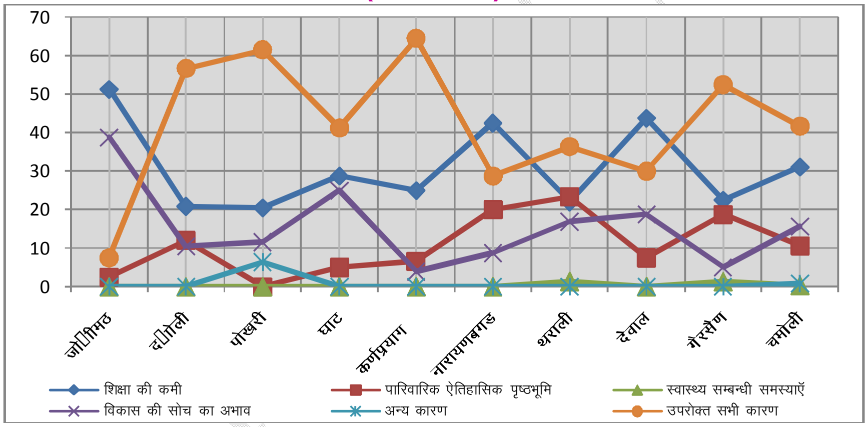

निष्कर्ष–

उक्त अध्ययन के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि चमोली जनपद में अनुसूचित जाति की जनसंख्या का आर्थिक रूप से पिछड़ने के कारणो में प्रमुख कारण शिक्षा व विशेष रूप से तकनीकी एवं व्यावसायिक शिक्षा है जो कि 31.08% है। इसके पश्चात् विकास की सोच का अभाव 15.61%, पारिवारिक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि 10.62%, स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याए 0.28%, अन्य कारण 0.72% एवं उपरोक्त सभी कारणों 41.69% है। यद्यपि भारतीय संविधान द्वारा अनुसूचित जातियॉ समाज में निर्दिष्ट जातियॉ है किन्तु समाज में आज भी अनुसूचित जाति समुदाय के लोगों को आर्थिकी प्राप्त करने के लिए आज भी कुछ क्षेत्रो में अवसर कम है। अनुसूचित जाति के सर्वांगीण विकास के लिए जनपद में सरकार द्वारा यह प्रयास किया जाना चाहिए कि विकासखण्डवार न्यूनतम नियमित 5 वर्षो के अन्तराल पर अनुसूचित जाति से सम्बधित आर्थिकी एवं विभिन्न पक्षों का अध्ययन होना चाहिए जिस से समय के साथ अनुसूचित जाति में होने वाले परिवर्तनों को समझा जाए एवं परिवर्तनों के अनुसार विकासखण्डवार आवश्यकतानुसार विभिन्न आर्थिकी एवं अन्य योजनाओं का क्रियान्वयन किया जाए।

सन्दर्भ सूचिः–

- Wikipedia
- Chamoli.nic.in
- Indar Singh Kohali, Unpublished Thesis, topic "Spatio - Temporal analysis of population dynamics of Scheduled Caste in Chamoli District" Department of Geography, Hemwati Nandan Bhuguna Garhwal University, Srinaagar Garhwal, (A Central University), Uttarakhand.
- Dr. Falak Butool, A.M.U, Aligarh, U.P., India research paper "Scheduled Caste Workers in Secondary Sector of Economy in Uttar Pradesh: A Regional Analysis" published in *International Journal of Management and Social Sciences Research (IJMSSR) ISSN: 2319-4421 Volume 3, No. 1, January 2014, Page 86-92.*
- Mrs. Binita Das Ph.D thesis (unpublished) topic "Role of Education on the Development of theSocio-Economic Conditions of the Scheduled Caste People with Special Reference to Kamrup District (Rural)", Department of EducationGauhati University, Guwahati-14 2013.
- Praveenjadhav Ph.D Thesis (unpublished) "Socio-Economic Status od Scheduled castes: A Comprative Study (With Special reference to Kolhapur District)", Nehru Institute of Social Sciences, Tilak Maharashtra Vidyapeeth, Pune-411 037.
- *Momita Goswami, Ph.D Thesis (Unpublished)" Socio- Economic Structure of Scheduled Caste population in the Brahmaputra Valley Assam: A Geographical Analysis "Department of Geography Gauhati University, 2005*

LBP PUBLICATION